International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 21-04-2024, Accepted: 12-05-2024, Published: 07-06-2024
Volume 10, Issue 2, 2024, Page No. 14-16

गोस्वामी तुलसीदासजी का व्यक्तित्व

गायत्री मुंजाजी पांचाळ
हिंदी विभाग, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ, छत्रपती संभाजीनगर महाराष्ट्र, भारत

सारांश
तुलसी का जीवन भले ही बाल्यावस्था से वृध्दावस्था तक कष्टप्रद रहा किंतु उन्होंने अपने विविध ग्रंथो के माध्यम से एवं उनके प्रसिध्द मानसरुपी गंगा के दवारा लोगो के मन का मैल हटाकर समाज मे एकता की भावना का बीज पिरोया। भक्तिमार्ग को अपनाकर अपना जीवन सुलभ बनाते हुए सामान्य जनता मे कर्तव्य निष्ठा मुल्य को बिंबित किया। आज की तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था को सुधारने मे मानस जैसा ग्रंथ आज भी प्रासंगिक एवं मौलिक नजर आता है

मूल शब्दः स्वान्तसुख, लोकनायक, लोकमंगल, प्रपत्तिवाद, सामाजिक चेतना

गोस्वामी तुलसीदास भक्तिकालीन साहित्य के श्रेष्ठतम कवि, लोकनायक एवं जाज्वल्यमान रत्न है। संत तुलसीदास का नाम सुनते ही हमारे सामने एक विराट साहित्यिक का रूप नजर आता है। वे एक आदर्श प्रतिभासंपन्न महाकवि, विदवान, भक्त, वक्ता जैसे अनेकविध रुपो में हमारे समक्ष प्रस्तुत होते है। उनका व्यक्तित्व उच्चतम स्तर की प्रतिभा तथा विराट एवं उदात्त दृष्टि के कारण महाकवि तथा लोकनायक के गौरव से संपन्न है। साहित्यिक दृष्टि से देखे या काव्य सौष्ठव की दृष्टि से देखे तो तुलसीदास जी एक महाकवि के रूप में प्रतिस्थापित होते है और जिसतरह उन्होंने लोगो को दिशादर्शाने का काम किया उसतरह लोग उन्हे लोकनायक के रूप मे पहचानने लगे। उनकी कृ तियोंदवारा हमे उनकी उदात्त सांस्कृतिक समन्वय चेतना, चरित्र निर्माण एवं कलात्मक विभूति का साक्षात प्रमाण मिलता है। भक्तिकालीन उस युग मे जब चारों तरफ एक निराशा का, अंधकार का युग था ऐसे मे तुलसी जैसे एक दैदीप्यमान नक्षत्र का अवतरण हुआ और सगुण भक्तिधारा के रामकाव्य परंपरा का प्रवर्तन करनेवाले कवि के रूप मे उन्होंने अपनी पहचान बनाई। उन्होंने बहुजन सुखाय बहुजन हिताय दृष्टि से काव्य का सृजन किया। वे संस्कृत, अवधि, ब्रजभाषा पर अपना समान अधिकार रखते थे। उन्होने अपनी समन्वयशैली से बहुत से ग्रंथो का निर्माण किया है। तुलसीने स्वान्तः सुखाय के लिए ग्रंथों की रचना की थी किंतु उनका यह स्वान्त सुख सर्वतो सुखाय मे परिवर्तित हो गया। तुलसी का स्वात सुख भी बहुजन हिताय है। वे अपनी रचनाओं मे लोक कल्याण एव लोकमंगल की बात करते है। उन्होने अपने अंतः करण सुख के लिए मानस जैसे महान धर्मग्रंथ की रचना की किन्तु उनका अंतरूकरण सुख सर्वजन सुखाय होकर संपूर्ण समाज के लिए बहुमुल्य ही सिध्द हुआ है।

संत तुलसीदास का व्यक्तित्व

प्राचीन संत महात्माओ के जीवन संबंधी सामग्री बहुत कम मात्रा में पाई जाती है। साहित्यकारो को अपनी जीवन गाथा समाज के सामने रखने में कोई रुचि नही थी। इसी कारण सन्त महात्माओं के जीवन संबंधी विवरणों में कई किवंदतियाँ प्रचलित जनश्रुति के आधार पर प्रकट हुई है। संत महात्माओं के जीवन संबंधी तथ्य् हमे उनके स्वकथित उल्लेखदवारा एकाध जगह पर एवं बर्हिरसाक्ष्यो के दवारा ही प्राप्त होते है। तुलसी के जीवनसंबंधी तथ्यों के बारे (जन्म, जन्मस्थान, जाति, गुरु, मुत्यु) मे विदवानो मे मत भिन्नताएँ पाई जाती है। अनेक विद्वानोद्वारा कथित किए गए वक्तव्योंसे स्पष्ट होता है कि तुलसी का जन्म संवत १५५४ से १५८६ के बीच हुआ। सर्वाधिक प्रमाणों के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि संवत् १५८६ ही तुलसी का जन्मकाल है।

"पंद्रह सौ चौवन बिसे कालिन्दी के तीर।
स्रावन शुक्ला सप्तमी तुलसी धरयौ सरीर।। "१

तुलसी की माता का नाम हुलसी और पिता का नाम आत्माराम दूबे था। जन्मस्थान संबंधी प्राप्त अन्तःसाक्ष्य् एवं बहिर्साक्ष्य के आधारपर अधिकतर विदवान राजापुर को ही उनका जन्मस्थान मानते है। तुलसी के अन्त्ः र्साक्ष्य के अनुसार उनका जन्म् ब्राम्हण परिवार मे हुआ था। जनश्रुतियों के अनुसार उनके गुरु का नाम नरहरिदास था। अन्तः साक्ष्य और किवंदतियो के आधार पर हम तुलसी के व्यक्तित्व का विवेचन इस प्रकार से कर सकते है। उन्होंने अपनी रचनाओं में यह प्रतीत किया है कि उनकी बाल्यावस्था अत्यंत विषम परिस्थितियों में गुजर गई। उनका जन्म अभूक्त मूल नक्षत्र में होने के कारण उनकी माता का निधन हुआ। ऐसा बर्हि साक्ष्य के आधार पर कहा जाता है। माता का देह त्याग होने की वजह से पिता ने भी उनको त्याग दिया। उनके पिता ने उन्हें मुनिया नाम की दासी के हाथों सौंप दिया। इसका विवरण मुल गोसाई चरित में भी मिलता है। दुर्भागवश मुनिया भी ५ वर्ष तक गोस्वामीजी का पालनपोषण कर सकी। बाद में मुनिया का भी स्वर्गवास हो गया। इस बात का वर्णन उन्होंने कवितावली और विनय पत्रिका में अनेक प्रसंगों में किया है। वह अत्यंत दयनीय है।

"मातु पिता जग जाय त्यजो विधि हून लिखी कुछ भाल भलाई"
(कवितावली ७/५७)
"जननी जनक त्यजो जनमि करम बिनु बिदिहू सुज्यो अवडेरे"
(विनय पत्रिका २२७/२)

साधारण रुप से इन पँक्तियो का अर्थ निकलता है कि माता पिता ने किसी कारणवश तुलसी को त्याग दिया परंतू विनयपत्रिका में उन्होने अपने माता पिता के प्रति जो प्रेमभाव, श्रध्दा व्यक्त कि है उससे ज्ञात होता है कि उनका मन वात्सल्य से भरा हुआ था। माता पिता के मूत्यू के कारण उनको माता पिता के प्रेमसे वंचित रहना पडा।
"डॉ. राम दत्त भारद्वाज ने तुलसी जी के बाल्यावस्था का वर्णन करते हुए लिखा कि तुलसीदास जी १० माह के थे। उनके माता–पिता उन्हें छोड़कर चल बसे और उनके चाचा जीवाराम की भी मृत्यु कुछ समय पश्चात हुई। मुनिया नामक दासी थी,

उसका भी देहांत हो गया किंतु उनकी दादी थी पर वह वृद्धावस्था से पीड़ित होने के कारण उनका पालन पोषण करने को सक्षम न थी। इस वजह से उनको बाल्यावस्था से ही दर–दर भटक कर राम नाम का सहारा लेते हुए भिक्षा मांगनी पड़ी।"२

जब वह युवावस्था में आए बाद में उनका विवाह संवत १५८३ मे जेष्ठ शुक्ल गुरुवार को भारव्दाज गोत्रीय सुंदर कन्या रत्नावली नामक युवती से हुआ। बर्हि साक्ष्य के आधार पर हम कह सकते हैं कि रत्नावली अत्यंत सुंदर थी और गोस्वामीजी को रत्नावली से अधिक लगाव था। जब वह अपने मायके चली गई तो तुलसी जी भी उनके पीछे–पीछे उनके मायके तत्काल बढ़ी हुई यमुना पार करके जाकर उनसे मिले। उनकी इस कामासक्ती पर खींझकर रत्नावली ने उनसे कहा।

"लाज न लागति आपको दौरे आयहु साथ।
धिक–धिक ऐसे प्रेम को, कहा कहौं मै नाथ।।
अस्थि चर्म मय देह मम, तामें जैसी प्रीति।
ऐसी जो कहुँ राम महँ, होत न तो भव भीति।।"३

रत्नावली ने कहा कि हड्डी मास के शरीर को इतना प्रेम करने से अच्छा है कि तुम भगवान श्रीराम की आराधना करो। पत्नी की यह बात सुनते ही तुलसी को ज्ञानोदय हुआ और केवल ३२ वर्ष की आयु में विरक्त होकर वे सौरो चले गए। उनके मन में वैराग्य की भावना उत्पन्न हुई। गृह त्याग करके वे काशी अयोध्या, जगन्नाथपुरी, द्वारका, रामेष्वर, कैलाश मानसरोवर तक घूम कर चित्रकूट में पहुंचे और वहां पर उन्होंने सत्संग किया और उनकी प्रसिद्ध निरंतर बढ़ती जा रही थी। बड़े–बड़े संत महात्मा उनसे विचार विनिमय करने आते थे। गोस्वामी जी के अंत साक्ष्य के आधार पर हम उनके व्यक्तित्व के बारे में स्पष्ट रूप से कह सकते हैं। उन्होंने प्रयाग, काशी, अयोध्या, चित्रकूट, राजापुर मैं साधना की।

उनके इष्ट देव भगवान श्रीराम एवं हनुमान थे और भगवान शंकर जी के प्रति भी उनके मन में अपार श्रद्धा थी। उन्होंने अपने रामचरितमानस की गुरु वंदना में शंकर जी का वर्णन किया। उन्होंने रामचरितमानस के रूप में समाज मे आदर्श प्रस्थापित किया है। गोस्वामी जी बड़े भावना प्रधान रहे हैं। उन्होंने अपने काव्य में अनेक मार्मिक प्रसंगों का वर्णन किया है। भावुकता प्रधान प्रसंगों को अधिक विस्तृत और आकर्षक शैली में उन्होंने वर्णित किया है। तुलसी की रचनाओं का मूल उद्देश्य है कि वह लोकमंगल, लोक कल्याणकारी हो। इसी आलोक में उनकी सामाजिक चेतना की निर्मिती होती है। दर्शन, भक्ति, प्रेम, मूल्य प्रतिष्ठा और परस्पर समन्वय इन सब का अद्‌भुत समन्वय इनके काव्य में मिलता है। प्रपत्तीवाद या भक्ति भावना की दृष्टि से देखे तो उन्होंने अपने काव्य में भक्ति के अनेक रूपों को समाहित किया है। लोक संस्कृति, लोक जीवन, लोक आस्था और लोक मान्यताओं को भी वे अपने काव्य में समाहित करते हैं। उपेक्षितो के प्रति एकता की भावना, आत्मियता की भावना, उन्हें अपनाने की भावना अपने काव्य में प्रदर्शित करते हैं। रामकथा कल्याण करने वाली और कलियुग के पापों को हरने वाली है। उन्होने अपनी रचनाओं में आदर्श जीवन मूल्यों को केंद्र में रखा। तुलसी के समाज जीवन की नीव आदर्श परिवार, आदर्श समाज और लोकमंगल की बुनियाद पर खड़ी है।

तुलसीजी भारतीय सामाजिक व्यवस्था के अनुरूप संयुक्त परिवार को अधिक महत्व देते हैं। वे केवल सिद्धांतों के आधार पर नहीं बल्कि पात्रों में समन्वय दृष्टि के साथ यह बात वे हमारे समक्ष प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने रामचरितमानस जैसे अद्‌भुत अलौकिक ग्रंथ का निर्माण किया। रामचरितमानस को हिंदू समाज का जातीय चेतना का ग्रंथ भी कहा जाता है। लोकमंगल की स्थापना करने वाला ग्रंथ भी मानस को कहते हैं। तुलसी की समन्वय दृष्टी, समाज को नई राह दिखाने कि ईच्छा, काव्य प्रतिभा के कारण उन्हें लोकनायक कहा जाता है। आज भी इतने सालों बाद तुलसी ने अपनी रचनाओं द्वारा भारतीय जनमानस पर अमीट छाप छोड़ी है। "आचार्य हजारी प्रसाद व्दिवेदी के अनुसार लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय की चेष्टा कर सके। बुद्धदेव समन्वयकारी थे, गीता में समन्वय की चेष्टा है। तुलसीदास भी समन्वयकारी थे।"४ लोक और शास्त्र के व्यापक ज्ञान ने तुलसीदास को अभूतपूर्व सफलता दी। उनका सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है।

तुलसी जी बहूश्रुत कवि थे। उन्होंने ग्रहत्याग करने के बाद वे अनेक तीर्थ स्थलों पर गए। वहां पर उन्होंने बड़े–बड़े विद्वानों से राम कथा सुनी। मौखिक परंपरा से उन्होंने राम कथा का श्रवण किया।

"नाना पुराण निगमागम संमत यद
रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतो पि
स्वान्त सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा
भाषा निबध्द मति मंजुल यातनेानि"५
(मानस बालकांड श्लोक ७)

वैदिक साहित्य में राम कथा का उल्लेख नहीं मिलता। फिर भी उन्होंने बार–बार वैदिक साहित्य का उल्लेख किया है। उन्होंने कालिदास जी का महाकाव्य, भवभूति का उत्तमरामचरितम्, भासका प्रतिभा नाटकम, संस्कृत में वाल्मीकि रामायण आदि ग्रंथों का आधार लेकर उन्होंने रामचरितमानस की रचना की है परंतु इनमें मुख्यत वाल्मीकि रामायण को रामचरितमानस का मुख्य आधार या स्त्रोत माना जाता है। अध्यात्म रामायण का अंश मानस पर रहा है। लेकिन अध्यात्म रामायण कोई स्वतंत्र ग्रंथ नहीं है। वह ब्रह्मांड पुराण का अंश है। इसमें संपूर्ण कथा उमामाहेष्वर (शिव पार्वती) के संवाद के रूप में कही गई है। तुलसी ने इस प्रक्रिया का आधार लेकर श्रोताओ तक तथा तीन वक्ताओं के माध्यम से तथा चौथे कवि और पाठकों के द्वारा राम कथा कही गई है।

संस्कृत के अनेक नाटक जैसे प्रसन्न राघव, रघुवंश, हनुमान नाटक, जानकी हरण इत्यादि से तुलसी जी बहुत प्रभावित हुए हैं। उन्होंने पद्मपुराण का भी अध्ययन किया था। दशरथ जी ने जो पुत्रकामेष्ठी यज्ञ किया था। उसका उल्लेख जानकी हरण, रघुवंश, पद्म पुराण तथा अध्यात्म रामायण में मिलता है। रामचरितमानस की बहुत सी कथाएं ऐसी है, जिनके वर्णन का आधार प्रसन्न राघव, रघुवंश अध्यात्म और आनंद रामायण, हनुमान नाटक आदि पर आधारित है। हनुमान विभीषण का मिलन प्रसंग पउमचरिउ से लिया गया है। इसके अलावा महाभारत तथा अनेक पुराणो में जहाँ कही भी रामकथा की बात आती है। वहां से उन्होंने कुछ ना कुछ बातें आधार के स्वरूप में स्वीकार की है। भगवत गीता, पद्म पुराण, ब्रह्मा वैवर्त पुराण, शिव पुराण का भी तुलसी ने अध्ययन किया है। इस तरह तुलसी जी ने गृहत्याग करने के बाद बहुत से तीर्थ स्थलों पर गमन करके वहां पर ज्ञानीपंडितो से वेदाअध्ययन किया और अपने ज्ञान का अपार भंडार भर लिया। तुलसी आशावादी कवि थे। उनके समय की युगीन परिस्थिती मे सुधार लाने हेतु उन्होंने मानस जैसे आदर्श ग्रंथ का निर्माणकर अपनी समन्वय दृष्टी से धर्म का संरक्षण किया और धर्म को पुर्नस्थापित करने मे मददगार बने। तुलसीने अपने भक्तिपंथ मे सबको समान दर्जा दिया है। मानस को सही मायने मे समझने वाला भक्त भेदभाव की बुध्दि से कोसो दूर रहता है एवं सभी धर्मो को समता की दृष्टि से न्याहारता है। तत्कालीन समाज मे स्वार्थ परायणता को महत्व दिया जा रहा था। तुलसीने समाज की सभी समस्यांओ का निराकरण करने का एकमेव मार्ग बताया है और वह है भक्ति। माता– पिता, पुत्र–पुत्री, पिता–पुत्र, पुत्र–माता, भाई–भाई, पति–पत्नी, राजा–प्रजा सभी

सगे संबंधियों मे भक्तिभाव जागृत कराकर त्याग का महत्व प्रतिपादित करते हुए कर्तव्यनिष्ठ होने की प्रेरणा प्रदान की। तुलसी के जीवन का मूल उददेश्य भक्ति भाव का विकास एवं सामान्य जनता के बीच धार्मिक सिन्धांतो को दृढ करना। ऐसे महान संत को वृध्दावस्था मे रुद्रबीसी एवं मीन की शनिदशा जैसे विषम योग की स्थिती उत्पन्न होने से मृत्यु प्राप्त हुई।

"संवत सोलह सौ अस्सी असी गंग के तीर।
सावन स्यामा तीज शनि तुलसी तज्ये सरीर।"

मूल गोसाई चरित्र

संदर्भ सूची

1. मुकुन्द प्रभु पृष्ठ ६४. रामचरितमानस और कौशिक रामायण का तुलनात्मक अध्ययन
2. मुकुन्द प्रभु पृष्ठ ६४. रामचरितमानस और कौशिक रामायण का तुलनात्मक अध्ययन
3. डॉ. गिरीशचंद्रपाल पृष्ठ १६. रामचरितमानस के अयोध्याकाण्ड का भाव सौंदर्य, व्दितीय संस्करण, साधना प्रकाशन २०१८
4. हजारी प्रसाद व्दिवेदी पृष्ठ ८४. हिन्दी साहित्य की भूमिका
5. संत तुलसीदास, दोहा ७, बालकाण्ड, रामचरितमानस टीकाकार हनुमानप्रसाद पोददार